अनपढ़ औरतों ने वीडियो फिल्म बनाना सीखा

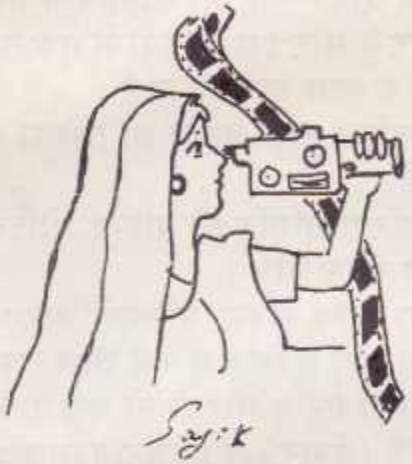

गुजरात 'सेवा' संस्था औरतों को संगठित कर उनके विकास के बहुत तरह के कामों में लगी है, जैसे स्वास्थ्य सेवाएं दिलाने, कर्ज व कानूनी सहायता दिलाना और रोजगार की ट्रेनिंग दिलाना आदि।

1984 में संस्था ने वीडियो फिल्म बनाने की तीन हफ्ते की कार्यशाला आयोजित की जिसमें फेरी लगाने वाली और अगरबत्ती बनाने वाली औरतों से लेकर खेतिहर मज़दूरिनों ने भाग लिया। भाग लेने वालों में एक युवा छात्रा ज्योति जुमानी को 'सेवा' की वीडियो इकाई के संचालन का काम सौंपा गया।

ज्योतिबेन का मानना है कि जब औरतें वीडियो फिल्म बनाएंगी तब उनकी बात दूर-दूर तक पहुंचेगी। यह बहुत असरदार माध्यम है। इससे वे अपनी आवाज उठा सकेंगी और नीति बनाने वालों तक पहुंच सकेंगी।

ज्योतिबेन अपने अनुभव से बताती हैं कि औरतों की विकास प्रक्रिया में वीडियो महत्वपूर्ण योग दे सकता है।

ट्रेनिंग

चूंकि ज्यादातर औरतें अनपढ़ थीं, उन्हें अलग-अलग प्रशिक्षण देने की जरूरत पड़ी। समझ, शिक्षा का स्तर, याद रखने की क्षमता और रुचि अलग-अलग थी। औरतों को शुरू में यही समझ नहीं आता था कि छोटे से पर्दे पर इतनी सब औरतें कैसे फिट हो जाएंगी।

ज्योतिबेन के लिए भी यह नया अनुभव था। सीखने-सिखाने की लंबी क्रिया चली जिसमें मेहनत, अभ्यास और धैर्य दोनों की जरूरत थी। औरतों को फोटो खींचना सिखाने के अलावा अनेक बातें सिखानी पड़ीं। समय में काम करना, ज़िम्मेदारी से करना और कामों की जवाबदेही आदि की ट्रेनिंग देनी पड़ी। अभ्यास के बहुत टेप बनाए गए, पर थोड़े ही समय में औरतें इस जटिल तकनीक को सीख गईं। उनका पढ़ा-लिखा न होना आड़े नहीं आया। उनमें धीरे-धीरे यह विश्वास जगा कि वे फोटो खींच सकती हैं, वीडियो टेप चला सकती हैं। अब प्ले, बी. एन. सी., 14 पिन कैमरा केबिल, रिवाइंड, फास्ट फारवर्ड, इन, आउट माइक्रोफोन आदि शब्द उनकी शब्दावली का हिस्सा बन गए हैं।

वीडियो बहुत से बटनों को दबाकर चलाया जाता है जिनका नाम अंग्रेज़ी में लिखा होता है। औरतों को अंग्रेज़ी के शब्दों को पढ़ना और उनका मतलब सिखाना जरूरी था। इसमें समय लगा, पर एक बार सीख जाने पर औरतों में भरोसा पैदा हुआ और वे उसे बिना कठिनाई चलाने लगीं।

जब वीडियो फिल्म दूर बसे गांवों में ले जाई गई तब लोगों की ऐसी भीड़ जुटी जैसे वह चुंबक हो। ज्योतिबेन बताती हैं कि शुरू में तो औरतें चुपचाप देखती रहती हैं, पर जल्दी ही वे उसमें सक्रिय भाग लेने लगती हैं। भीड़ में स्त्री-पुरुष, बच्चे सब शामिल होते हैं। वे जल्दी फिल्म के पात्रों के साथ जुड़ जाते हैं क्योंकि उन्हें वे अपने जैसे ही लगते हैं। कई लोगों ने अपने जीवन-संबंधी फिल्म बनाने को कहा। ज्योतिबेन कहती हैं कि लोगों से जान-पहचान बढ़ाने में एक महीना लग जाता है जबकि फिल्म की शूटिंग में सिर्फ एक दिन लगता है।

फिल्म बनाना

ज्योतिबेन और उनकी टीम जब फिल्म बनाती हैं तब वहां जुटी भारी भीड़ को वे काम में शामिल कर लेती हैं। किसी को लाइट पकड़ने और किसी को माइक पकड़ने का काम सौंप देती हैं।
उनकी कोशिश रहती है कि फिल्मी उपकरण को औरतें यह न समझें कि वह नाजुक है और वे उसे छू नहीं सकतीं या छूने से वह खराब हो जाएगा। ज्योतिबेन का विश्वास है कि औरतों के हाथों में वीडियो का माध्यम आ जाने से वे अपने मुद्दों को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठा सकेंगी।

जुबानी या पत्रिका में लिखकर बात कहने का उतना असर नहीं होता जितना कि टी.वी. या फिल्म दिखाकर। टी. वी. में अपनी जैसी औरतों को देखकर उनमें नई जागरुकता, नई समझ और नई ताकत जागती है और उन्हें लगता है कि सब औरतों की समस्याएं एक जैसी हैं। उनमें संगठित होने की इच्छा बढ़ती है और बहनचारा बढ़ता है। तब वह समस्या मुद्दा बन जाती है। वह व्यक्तिगत स्तर से उठकर सामाजिक और राजनैतिक रूप ले लेती है, जिसके समाधान के लिए सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर काम जरूरी है।

जितनी ज्यादा औरतें वीडियो इस्तेमाल करना सीखेंगी (उनके जीवन में तो बदलाव आएगा ही) उतना ही समाज के ठेकेदारों और राजनैतिक नेताओं के उदासीन रवैये को भी बदल सकेंगी।

'सेवा' वीडियो फिल्मों की सूची

1. मानेक चौक—यह अहमदाबाद में सब्जी का बाजार है और इस वीडियो में एक सब्जी बेचने वाली के साथ साक्षात्कार है।
2. धुआं-रहित चूल्हा बनाने का तरीका बताया गया है।
3. सहकारिता समिति की वार्षिक मीटिंग।
4. जीवन रक्षक घोल।
5. महिला विश्व बैंकिंग, पश्चिमी भारत—इसमें बताया गया है कि कैसे कर्ज मिल सकता है। यह संस्था गरीब औरतों को कर्ज देती है।
6. रेडीमेड (तैयार) कपड़े बनाने वालों का जुलूस। 5,000 कामगरों ने पुलिस स्टेशनों और नगर निगम के दफ्तर के सामने पुलिस अत्याचार के खिलाफ और लाइसेंस की मांग के लिए जुलूस निकाला।
7. मुस्तकम बीबी—नौ साल से कपड़े सींकर बेचने वाली औरत के साथ साक्षात्कार है जो अपने काम के लंबे घंटों, कम आमदनी, व्यापारियों द्वारा कपड़ों में नुक्स निकाल कर उन्हें न लेने के बारे में असलियत बताती है।
   फिल्म हिंदी में है।
8. 'सेवा' द्वारा संचालित सहकारी समितियों में कपड़ा बुनने, बेंत व लकड़ी की चीजें बनाने व ब्लाक की छपाई-रंगाई के बारे में है।
9. फेरी लगाने वालों का जुलूस।
10. महिला बीड़ी कामगर।
11. डेरी सहकारिता।
12. सोलर कुकर।
13. कामगर बच्चे।
14. युवा मारवाड़ी लड़कियां—अनपढ़ मारवाड़ी लड़कियों के बारे में जिन्हें घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता। उनके साथ साक्षात्कार।
15. सय्यो—'बोहरा मुसलमानों' में एक अजीब सा

रिवाज है। काफी छोटी उम्र की लड़कियों का समूह बना दिया जाता है जो बूढ़ी होने तक साथ रहती हैं। उनकी शादी नहीं होती।
उस समूह के साक्षात्कार पर फिल्म बनाई गई है। फिल्म अंग्रेज़ी में है।

16. टीकों पर।
17. इंदिरा जयसिंह वकील के साथ साक्षात्कार। सब्जी बेचने वाली और घर में रहकर रोजगार चलाने वाली औरतों के संबंध में कानूनी जानकारी।
18. सेवा बैंक।

सभी फिल्में रंगीन हैं। ज्यादातर गुजराती में हैं, पर अंग्रेज़ी में भी बताया गया है। मुस्तकम बीवी फिल्म हिंदी में है।

वीडियो फिल्में मिलने का पता—

वीडियो सेवा
सेवा रिसेप्शन सेंटर
विक्टोरिया गार्डन के सामने
अहमदाबाद-380001 (गुजरात)
फोन—390577, 290329 □